I J C R M

International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

डिजिटल मीडिया और युवा आदिवासी महिलाओं का शैक्षिक सशक्तिकरण : बांसवाड़ा जिले का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

विजय सिंह [1*], डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़ [2]

[1] शोधार्थी, समाजशास्त्र विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान, भारत

[2] एसोसिएट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, बनस्थली विद्यापीठ, निवाई, टोंक, राजस्थान, भारत

Corresponding Author: * विजय सिंह

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20688834

सारांश

डिजिटल प्रौद्योगिकी के तीव्र विस्तार ने शिक्षा के स्वरूप, ज्ञान तक पहुँच तथा सीखने की प्रक्रियाओं में व्यापक परिवर्तन उत्पन्न किया है। विशेष रूप से डिजिटल मीडिया ने सामाजिक रूप से वंचित एवं हाशिये पर स्थित समुदायों के लिए शैक्षिक अवसरों के नए द्वार खोले हैं। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य बांसवाड़ा जिले की आदिवासी युवा महिलाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण में डिजिटल मीडिया की भूमिका का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना है। अध्ययन 200 आदिवासी छात्राओं से प्राप्त प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है। शोध में वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया तथा भारित माध्य, रैंकिंग मैथड एवं तुलनात्मक विश्लेषण द्वारा आंकड़ों का अध्ययन किया गया। परिणामों से स्पष्ट हुआ कि डिजिटल मीडिया का सर्वाधिक प्रभाव अध्ययन सामग्री की उपलब्धता, विषयों की बेहतर समझ, शैक्षिक जानकारी तक पहुँच तथा प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी पर देखा गया। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि डिजिटल मीडिया आदिवासी युवतियों के ज्ञान संसाधनों तक पहुँच का लोकतंत्रीकरण कर रहा है, किन्तु इंटरनेट कनेक्टिविटी, डिजिटल उपकरणों की सीमित उपलब्धता तथा डिजिटल विभाजन जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। निष्कर्षतः डिजिटल मीडिया आदिवासी महिलाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभर रहा है।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 06-03-2025
- **Accepted:** 26-04-2025
- **Published:** 30-04-2025
- **IJCRM:**4(2); 2025: 517-522
- **©2025, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

सिंह विजय, राठौड़ हितेंद्र सिंह. डिजिटल मीडिया और युवा आदिवासी महिलाओं का शैक्षिक सशक्तिकरण : बांसवाड़ा जिले का एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. Int J Contemp Res Multidiscip. 2025;4(2):517-522.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मुख्य शब्द: डिजिटल मीडिया, आदिवासी महिला, शैक्षिक सशक्तिकरण, डिजिटल विभाजन, डिजिटल साक्षरता ।

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

वर्तमान युग में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी सामाजिक परिवर्तन की सबसे प्रभावशाली शक्तियों में से एक बन चुकी है। डिजिटल मीडिया ने ज्ञान, सूचना और संचार तक पहुँच के स्वरूप को परिवर्तित करते हुए शिक्षा के क्षेत्र में नए अवसर उत्पन्न किए हैं। इंटरनेट, स्मार्टफोन, सोशल मीडिया और ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म ने शिक्षा को पारंपरिक कक्षाओं की सीमाओं से बाहर निकालकर अधिक सुलभ और लचीला बनाया है।

भारत में डिजिटल इंडिया अभियान के पश्चात डिजिटल संसाधनों की पहुँच में वृद्धि हुई है, किन्तु ग्रामीण और आदिवासी क्षेत्रों में डिजिटल असमानता अभी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है। विशेष रूप से आदिवासी छात्राओं को शिक्षा, तकनीकी संसाधनों और इंटरनेट तक पहुँच में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

बांसवाड़ा जिला राजस्थान का प्रमुख आदिवासी बहुल क्षेत्र है, जहाँ सामाजिक-आर्थिक पिछड़ापन, सीमित शैक्षिक संसाधन तथा डिजिटल अवसंरचना की चुनौतियाँ मौजूद हैं। ऐसे संदर्भ में डिजिटल मीडिया आदिवासी युवतियों के लिए शिक्षा और ज्ञान तक पहुँच का एक महत्वपूर्ण माध्यम बन सकता है।

अध्ययन की पृष्ठभूमि

कोविड-19 महामारी ने डिजिटल शिक्षा की आवश्यकता और महत्व को अभूतपूर्व रूप से बढ़ा दिया। इस अवधि में शिक्षा का अधिकांश भाग ऑनलाइन माध्यमों पर निर्भर हो गया, जिससे डिजिटल विभाजन की वास्तविकता अधिक स्पष्ट रूप से सामने आई। विशेष रूप से आदिवासी छात्राओं को इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल साक्षरता की कमी के कारण गंभीर शैक्षिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

विभिन्न अध्ययनों ने यह सिद्ध किया है कि डिजिटल मीडिया शिक्षा तक पहुँच, सूचना प्राप्ति और कौशल विकास के नए अवसर प्रदान करता है। लेकिन डिजिटल पहुँच में लैंगिक और सामाजिक असमानताएँ अभी भी व्यापक हैं।

साहित्य समीक्षा

डिजिटल तकनीक और महिला सशक्तिकरण के मध्य संबंध समकालीन सामाजिक विज्ञान अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण विषय बन चुका है। सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को विकास, सामाजिक समावेशन तथा लैंगिक समानता को बढ़ावा देने वाले प्रमुख साधनों में से एक माना जाता है। विभिन्न अध्ययनों ने यह दर्शाया है कि डिजिटल मीडिया शिक्षा, आर्थिक अवसरों, सामाजिक जागरूकता और राजनीतिक सहभागिता को बढ़ाकर महिलाओं के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। हालांकि डिजिटल संसाधनों तक असमान पहुँच, डिजिटल कौशल की कमी तथा सामाजिक-सांस्कृतिक अवरोध इस प्रक्रिया को प्रभावित करते हैं।

Amartya Sen (1999) ने अपनी प्रसिद्ध कृति "Development as Freedom" में प्रतिपादित किया कि विकास का वास्तविक उद्देश्य व्यक्तियों की स्वतंत्रताओं और क्षमताओं का विस्तार करना है। यद्यपि सेन का कार्य सीधे डिजिटल तकनीक पर केंद्रित नहीं था, लेकिन बाद के शोधकर्ताओं ने क्षमता उपागम का उपयोग डिजिटल समावेशन और डिजिटल सशक्तिकरण की व्याख्या के लिए किया है। सेन के अनुसार संसाधनों की उपलब्धता तभी सार्थक है जब वे वास्तविक अवसरों और उपलब्धियों में परिवर्तित हो सकें। डिजिटल मीडिया के संदर्भ में इसका अर्थ है कि केवल इंटरनेट या स्मार्टफोन की उपलब्धता पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनका उपयोग कर शिक्षा, कौशल और अवसरों तक पहुँच बनाना अधिक महत्वपूर्ण है।

Nussbaum (2000) ने क्षमता उपागम को आगे विकसित करते हुए महिलाओं के विकास और लैंगिक न्याय के संदर्भ में इसकी उपयोगिता को स्पष्ट किया। उनके अनुसार शिक्षा, सूचना और संचार तक पहुँच महिलाओं की क्षमताओं के विस्तार का आधार है। डिजिटल तकनीक इन क्षमताओं को विकसित करने का एक प्रभावी माध्यम बन सकती है।

Ragnedda (2018) ने "डिजिटल कैपिटल" की अवधारणा प्रस्तुत करते हुए तर्क दिया कि डिजिटल संसाधन और डिजिटल कौशल आधुनिक समाज में एक नई प्रकार की पूंजी का निर्माण करते हैं। जिन व्यक्तियों के पास डिजिटल पूंजी अधिक होती है, वे शिक्षा, रोजगार और सामाजिक अवसरों तक बेहतर पहुँच बना पाते हैं। यह अवधारणा विशेष रूप से आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में महत्वपूर्ण है, क्योंकि डिजिटल पूंजी की कमी उन्हें विकास की मुख्यधारा से दूर रख सकती है।

Nayak और Alam (2022) ने झारखंड के आदिवासी समुदायों में कोविड-19 महामारी के दौरान डिजिटल शिक्षा का अध्ययन किया। उनके अध्ययन में पाया गया कि डिजिटल विभाजन केवल तकनीकी अवसंरचना की समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारकों से भी प्रभावित होता है। परिवार की आर्थिक स्थिति, अभिभावकों की शिक्षा तथा सामाजिक दृष्टिकोण डिजिटल शिक्षा तक पहुँच को प्रभावित करते हैं। अध्ययन में यह भी पाया गया कि अनेक आदिवासी छात्राएँ स्मार्टफोन और इंटरनेट की अनुपलब्धता के कारण ऑनलाइन शिक्षा से वंचित रह गईं।

Arya (2025) ने केरल की आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में डिजिटल पहुँच और सशक्तिकरण का अध्ययन किया। अध्ययन के निष्कर्षों से स्पष्ट हुआ कि इंटरनेट उपयोग और डिजिटल साक्षरता महिलाओं की सामाजिक जागरूकता, शैक्षिक अवसरों तथा सामाजिक सहभागिता को बढ़ाते हैं। हालांकि डिजिटल संसाधनों की कमी और तकनीकी कौशल का अभाव महिलाओं के डिजिटल बहिष्करण (Digital Exclusion) का प्रमुख कारण बना हुआ है।

Meherali et al. (2021) ने निम्न एवं मध्यम आय वाले देशों में किशोरियों की डिजिटल साक्षरता और सशक्तिकरण पर एक व्यवस्थित समीक्षा प्रस्तुत की। अध्ययन में पाया गया कि डिजिटल साक्षरता कार्यक्रम किशोरियों के आत्मविश्वास, ज्ञान, निर्णय क्षमता और सामाजिक भागीदारी को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह निष्कर्ष डिजिटल शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के मध्य सकारात्मक संबंध को रेखांकित करता है।

UN Women (2023) की रिपोर्ट के अनुसार डिजिटल तकनीक महिलाओं के लिए शिक्षा, वित्तीय समावेशन, उद्यमिता और नेतृत्व के नए अवसर उत्पन्न करती है। हालांकि रिपोर्ट यह भी इंगित करती है कि महिलाओं और पुरुषों के बीच डिजिटल पहुँच में अभी भी उल्लेखनीय अंतर मौजूद है, विशेष रूप से ग्रामीण और आदिवासी समुदायों में।

भारत के संदर्भ में GSMA (2023) की रिपोर्ट ने संकेत दिया कि ग्रामीण महिलाओं की तुलना में पुरुषों के पास इंटरनेट और स्मार्टफोन तक अधिक पहुँच है। यह डिजिटल लैंगिक अंतर (Digital Gender Gap) महिलाओं की शैक्षिक और आर्थिक प्रगति को प्रभावित करता है।

उपरोक्त अध्ययनों के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि डिजिटल मीडिया महिलाओं के शैक्षिक एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

निभाता है। तथापि अधिकांश अध्ययन या तो सामान्य महिला आबादी पर केंद्रित हैं अथवा डिजिटल विभाजन के तकनीकी पक्षों तक सीमित हैं। राजस्थान, विशेषकर बांसवाड़ा जिले की युवा आदिवासी महिलाओं के संदर्भ में क्षमता उपागम के माध्यम से डिजिटल सशक्तिकरण का विश्लेषण करने वाले अध्ययन अत्यंत सीमित हैं। यही इस अध्ययन का प्रमुख शोध-अंतरा है।

सैद्धांतिक रूपरेखा

प्रस्तुत अध्ययन तीन प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोणों—क्षमता उपागम, डिजिटल डिवाइड सिद्धांत और सशक्तिकरण सिद्धांत—पर आधारित है। ये तीनों सिद्धांत मिलकर डिजिटल मीडिया और आदिवासी महिला सशक्तिकरण के संबंध को समझने के लिए एक समग्र वैचारिक आधार प्रदान करते हैं।

क्षमता उपागम :

क्षमता उपागम का विकास प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एवं नोबेल पुरस्कार विजेता अमर्त्य सेन (1999) ने किया। इस दृष्टिकोण के अनुसार विकास का वास्तविक उद्देश्य केवल आर्थिक वृद्धि या संसाधनों की उपलब्धता नहीं है, बल्कि व्यक्तियों की स्वतंत्रताओं, अवसरों और क्षमताओं का विस्तार करना है।

अमर्त्य सेन ने दो प्रमुख अवधारणाएँ प्रस्तुत कीं:

(क) क्षमताएँ - वे वास्तविक अवसर हैं जिनके माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन के बारे में विकल्प चुन सकता है।

उदाहरण:

- शिक्षा प्राप्त करने की क्षमता
- डिजिटल तकनीक का उपयोग करने की क्षमता
- जानकारी तक पहुँच की क्षमता
- रोजगार प्राप्त करने की क्षमता

(ख) उपलब्धियाँ - वे उपलब्धियाँ हैं जो व्यक्ति अपनी क्षमताओं का उपयोग करके प्राप्त करता है।

उदाहरण:

- उच्च शिक्षा प्राप्त करना
- डिजिटल कौशल अर्जित करना
- प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण करना
- आर्थिक आत्मनिर्भरता प्राप्त करना

इस अध्ययन में डिजिटल मीडिया को एक संसाधन माना गया है, जो शिक्षा, सूचना और अवसरों तक पहुँच प्रदान करता है। जब युवा आदिवासी महिलाएँ इन संसाधनों का उपयोग कर अपनी शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक क्षमताओं का विस्तार करती हैं, तब वे क्षमताओं के विस्तार की प्रक्रिया से गुजरती हैं।

इस प्रकार : डिजिटल पहुंच → डिजिटल क्षमता → शैक्षणिक उपलब्धि → सशक्तिकरण

डिजिटल डिवाइड सिद्धांत

डिजिटल डिवाइड डिजिटल तकनीकों तक पहुँच और उपयोग में मौजूद असमानताओं की व्याख्या करती है। Van Dijk (2005) के अनुसार डिजिटल विभाजन केवल इंटरनेट या उपकरणों की अनुपलब्धता तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें चार स्तर शामिल हैं:

1. Motivational Access – तकनीक उपयोग की प्रेरणा
2. Material Access – उपकरण और इंटरनेट की उपलब्धता
3. Skills Access – डिजिटल कौशल
4. Usage Access – तकनीक का प्रभावी उपयोग

आदिवासी छात्राओं के संदर्भ में डिजिटल विभाजन निम्न रूपों में दिखाई देता है:

- स्मार्टफोन की सीमित उपलब्धता
- कमजोर इंटरनेट नेटवर्क
- डिजिटल साक्षरता का अभाव
- सामाजिक एवं लैंगिक प्रतिबंध

इस अध्ययन में डिजिटल डिवाइड सिद्धांत यह समझने में सहायता करती है कि डिजिटल संसाधनों तक पहुँच में असमानताएँ किस प्रकार शैक्षिक सशक्तिकरण को प्रभावित करती हैं।

सशक्तिकरण सिद्धांत

सशक्तिकरण सिद्धांत मुख्य रूप से Naila Kabeer (1999) के कार्यों से जुड़ी हुई है। कबीर के अनुसार सशक्तिकरण वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति उन विकल्पों और निर्णयों पर नियंत्रण प्राप्त करता है, जिनसे वह पहले वंचित था।

कबीर ने सशक्तिकरण के तीन प्रमुख घटक बताए:

(1) संसाधन (Resources)

- शिक्षा
- सूचना
- डिजिटल तकनीक
- आर्थिक साधन

(2) सक्रियता (Agency)

- निर्णय लेने की क्षमता
- आत्मविश्वास
- सामाजिक सहभागिता

(3) उपलब्धियाँ (Achievements)

- शैक्षिक उपलब्धियाँ
- आर्थिक आत्मनिर्भरता
- सामाजिक प्रतिष्ठा
- राजनीतिक जागरूकता

डिजिटल मीडिया इस प्रक्रिया में संसाधन और एजेंसी दोनों को मजबूत करता है। जब आदिवासी महिलाएँ डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से शिक्षा, जानकारी और अवसरों तक पहुँच प्राप्त करती हैं, तो उनकी निर्णय क्षमता और आत्मनिर्भरता में वृद्धि होती है।

अध्ययन के उद्देश्य

- आदिवासी युवा महिलाओं में डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता का अध्ययन करना।
- शैक्षिक सशक्तिकरण में डिजिटल मीडिया की भूमिका का विश्लेषण करना।
- डिजिटल मीडिया और शैक्षिक सशक्तिकरण के संबंध का समाजशास्त्रीय विश्लेषण करना।

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

अनुसंधान पद्धति

- अध्ययन क्षेत्र - बांसवाड़ा जिला, राजस्थान
- प्रतिदर्श - संभाव्य प्रतिदर्श से कॉलेज में अध्ययनरत 200 आदिवासी छात्राओं का चयन
- डेटा संग्रहण - साक्षात्कार अनुसूची (उपलब्ध डिजिटल उपकरण वाले खंड में पहले से निर्धारित विकल्पों वाले प्रश्न जबकि शैक्षिक सशक्तिकरण खंड 5-बिंदु लिकर्ट स्केल पर आधारित प्रश्न)
- विश्लेषण तकनीक - प्रतिशत, भारित माध्य, रैंकिंग मैथड

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

तालिका 1: उत्तरदात्रियों के पास उपलब्ध डिजिटल उपकरण
(Multiple Response Table, N = 200)

उपलब्ध डिजिटल उपकरण	आवृत्ति	प्रतिशत (%)
स्मार्टफोन	177	88.5 %
टैबलेट	7	3.5%
लैपटॉप	5	2.5%
कंप्यूटर	0	0
कोई डिजिटल उपकरण नहीं	23	11.5%

प्रतिशत की गणना कुल उत्तरदात्रियों (N=200) के आधार पर की गई है। यह Multiple Response तालिका है, अतः कुल प्रतिशत 100 से अधिक/कम हो सकता है।

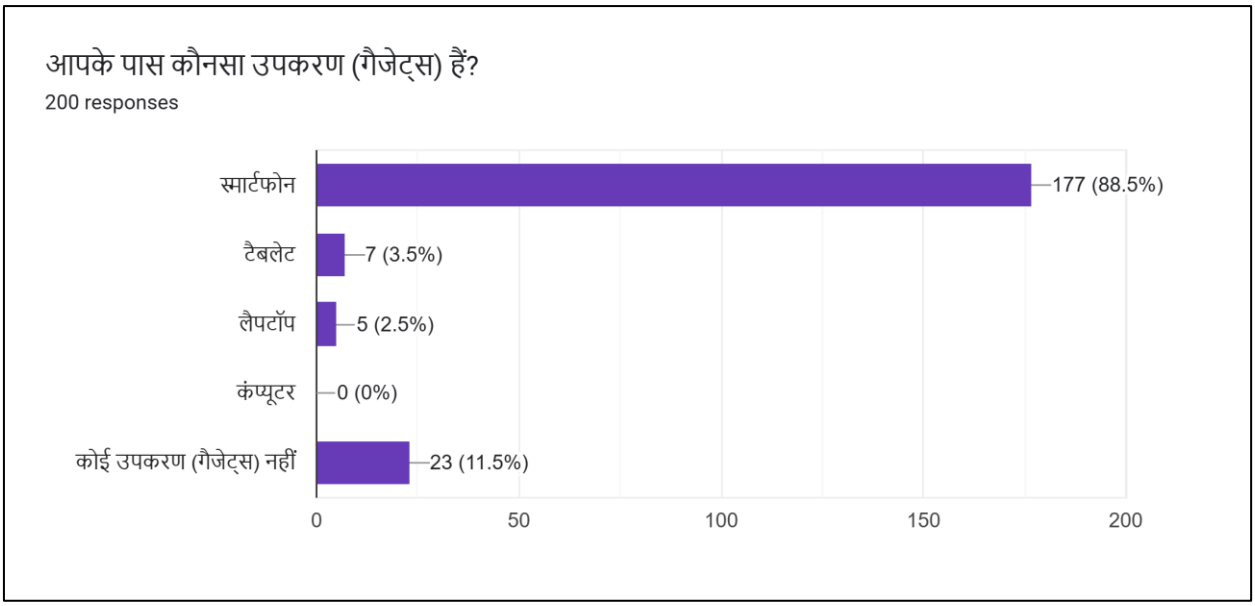

चित्र 1: उपलब्ध डिजिटल उपकरण

तालिका 1 एवं चित्र 1 से स्पष्ट होता है कि अध्ययन में सम्मिलित अधिकांश युवा आदिवासी महिलाओं (88.5%) के पास स्मार्टफोन उपलब्ध है, जो डिजिटल मीडिया तक पहुँच का प्रमुख माध्यम है। यह स्थिति दर्शाती है कि स्मार्टफोन आदिवासी छात्राओं के लिए शिक्षा, सूचना तथा ज्ञान संसाधनों तक पहुँच का सबसे महत्वपूर्ण उपकरण बन चुका है। इसके विपरीत टैबलेट (3.5%) एवं लैपटॉप (2.5%) जैसे उन्नत डिजिटल उपकरणों की उपलब्धता अत्यंत सीमित पाई गई, जबकि 11.5 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के पास कोई भी डिजिटल उपकरण उपलब्ध नहीं है। यह स्थिति डिजिटल विभाजन की ओर संकेत करती है, जो कुछ छात्राओं की शैक्षिक अवसरों और डिजिटल संसाधनों तक पहुँच को सीमित कर सकती है।

शैक्षिक सशक्तिकरण के संदर्भ में स्मार्टफोन की व्यापक उपलब्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसके माध्यम से छात्राएँ ऑनलाइन अध्ययन सामग्री, शैक्षिक वीडियो, प्रतियोगी परीक्षाओं की जानकारी, छात्रवृत्ति संबंधी सूचनाएँ तथा ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म तक पहुँच बना सकती हैं। इस प्रकार डिजिटल मीडिया आदिवासी युवा महिलाओं के लिए ज्ञान, सूचना और शैक्षिक अवसरों के विस्तार का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभर रहा है, यद्यपि डिजिटल संसाधनों की असमान उपलब्धता अभी भी एक महत्वपूर्ण चुनौती बनी हुई है।

तालिका 2: डिजिटल मीडिया और शैक्षिक सशक्तिकरण

कथन	भारित माध्य (Weighted Mean)	Rank
अध्ययन में सहायता मिलती है	4.11	4
सीखने की प्रक्रिया बेहतर बनाती है	4.245	1
प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायता	4.08	5
ऑनलाइन सामग्री से अध्ययन बेहतर हुआ	3.78	7
नए कौशल/भाषा सीखने में सहायता	4.055	6
शिक्षा संबंधी विकल्प चुनने में सहायता	4.12	3
छात्रवृत्ति/प्रवेश जानकारी प्राप्त होती है	4.205	2

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

डिजिटल मीडिया का समग्र शैक्षिक प्रभाव (Composite Mean)

Composite Mean = $(4.245 + 4.205 + 4.120 + 4.110 + 4.080 + 4.055 + 3.780) \div 7 = 4.08$

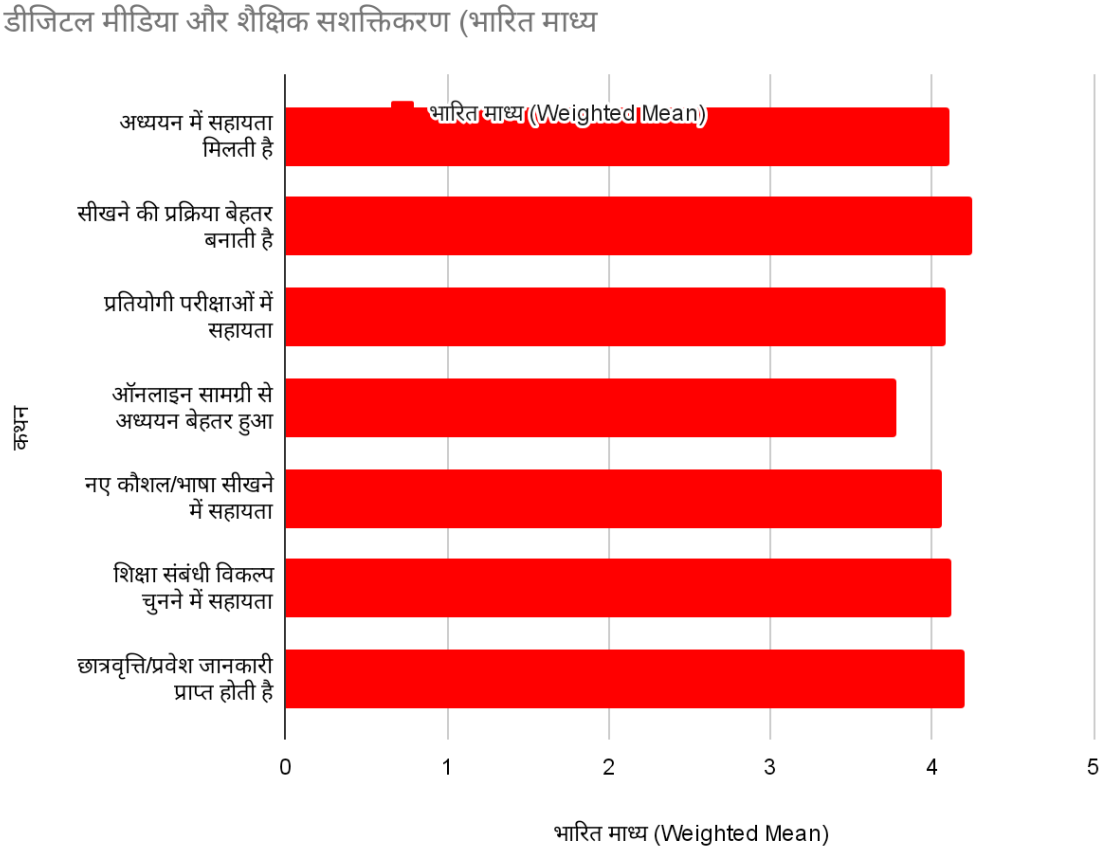

चित्र 2 : डिजिटल मीडिया और शैक्षिक सशक्तिकरण

तालिका 2 एवं चित्र 2 के संयुक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि डिजिटल मीडिया युवा आदिवासी महिलाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। शैक्षिक सशक्तिकरण से संबंधित विभिन्न कथनों के विश्लेषण से यह ज्ञात हुआ कि डिजिटल मीडिया का सर्वाधिक योगदान सीखने की प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने में है (Weighted Mean = 4.245)। यह इंगित करता है कि डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म पारंपरिक शिक्षण पद्धति के पूरक के रूप में कार्य करते हुए जटिल विषयों को सरल एवं दृश्यात्मक रूप में प्रस्तुत करते हैं, जिससे छात्राओं की विषय-वस्तु की समझ में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त छात्रवृत्ति, प्रवेश एवं शैक्षिक अवसरों से संबंधित जानकारी प्राप्त करने का आयाम भी अत्यंत महत्वपूर्ण पाया गया (Weighted Mean = 4.205)। इससे स्पष्ट होता है कि डिजिटल मीडिया सूचना असमानता को कम करने तथा शैक्षिक अवसरों तक पहुँच को विस्तारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

रैंकिंग विश्लेषण यह दर्शाता है कि डिजिटल मीडिया का प्रभाव केवल अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह छात्राओं की शैक्षिक निर्णय क्षमता, करियर जागरूकता तथा आत्मनिर्भर सीखने की क्षमता को भी प्रभावित करता है। शिक्षा संबंधी विकल्पों के चयन, प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी तथा नए कौशल सीखने जैसे आयामों में प्राप्त उच्च भारित माध्य इस बात का प्रमाण हैं कि डिजिटल मीडिया युवा आदिवासी महिलाओं के लिए ज्ञान अर्जन का एक बहुआयामी माध्यम बन चुका है। अध्ययन में प्राप्त 4.08 का Composite Mean विशेष रूप से उल्लेखनीय है, क्योंकि यह दर्शाता है कि अधिकांश उत्तरदात्रियाँ डिजिटल मीडिया को शैक्षिक सशक्तिकरण का प्रभावी और उपयोगी माध्यम मानती हैं। लिकर्ट स्केल के संदर्भ में यह मान उच्च स्तर की सहमति को प्रदर्शित करता है तथा यह संकेत देता है कि डिजिटल मीडिया ने छात्राओं की शैक्षिक उपलब्धियों, सीखने की गुणवत्ता तथा शैक्षिक अवसरों तक पहुँच को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है।

चर्चा

अध्ययन के परिणाम क्षमता उपागम की पुष्टि करते हैं। डिजिटल मीडिया महिलाओं की शैक्षिक क्षमताओं और अवसरों का विस्तार करता है। शिक्षा संबंधी जानकारी, कौशल विकास और निर्णय क्षमता में वृद्धि का संकेत है। डिजिटल मीडिया आदिवासी छात्राओं को शिक्षा, सूचना और

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

ज्ञान तक पहुँच प्रदान करके उनकी शैक्षिक क्षमताओं का विस्तार कर रहा है। इसके माध्यम से वे केवल जानकारी प्राप्त नहीं कर रही हैं, बल्कि अपने भविष्य, कैरियर और शैक्षिक प्रगति से संबंधित निर्णय लेने में भी अधिक सक्षम बन रही हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि डिजिटल मीडिया शिक्षा के लोकतंत्रीकरण का माध्यम बन रहा है। आदिवासी छात्राएँ अब शैक्षिक जानकारी, प्रतियोगी परीक्षाओं और कौशल विकास के अवसरों तक पहले की तुलना में अधिक आसानी से पहुँच बना रही हैं।

हालाँकि यह भी ध्यान देने योग्य है कि 11.5 प्रतिशत उत्तरदात्रियों के पास कोई डिजिटल उपकरण उपलब्ध नहीं है तथा टैबलेट और लैपटॉप जैसे उन्नत उपकरणों की उपलब्धता अत्यंत सीमित है। यह स्थिति डिजिटल विभाजन की निरंतर उपस्थिति को दर्शाती है। इसलिए डिजिटल मीडिया के माध्यम से शैक्षिक सशक्तिकरण की संभावनाओं को पूर्ण रूप से साकार करने के लिए डिजिटल अवसंरचना, इंटरनेट कनेक्टिविटी और डिजिटल संसाधनों तक समान पहुँच सुनिश्चित करना आवश्यक है।

समग्र रूप से यह कहा जा सकता है कि डिजिटल मीडिया युवा आदिवासी महिलाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है, जिसने ज्ञान तक पहुँच, सीखने की गुणवत्ता, शैक्षिक अवसरों की जानकारी तथा शैक्षिक निर्णय क्षमता को सुदृढ़ करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि डिजिटल मीडिया आदिवासी युवा महिलाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण में परिवर्तनकारी भूमिका निभा रहा है। यह ज्ञान, सूचना और अवसरों तक पहुँच का विस्तार कर रहा है तथा शिक्षा को अधिक सुलभ, लचीला और समावेशी बना रहा है। यद्यपि डिजिटल विभाजन और तकनीकी अवसंरचना संबंधी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं, फिर भी डिजिटल मीडिया सामाजिक न्याय, शैक्षिक समानता और महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभर रहा है। यदि डिजिटल अवसंरचना, डिजिटल साक्षरता और तकनीकी पहुँच को और अधिक सुदृढ़ किया जाए तो डिजिटल मीडिया आदिवासी महिलाओं के समग्र विकास और सामाजिक परिवर्तन का शक्तिशाली साधन सिद्ध हो सकता है।

सन्दर्भ

1. Arya S. Digital divide and women's (dis)empowerment. *Journal of Telecommunications and the Digital Economy*. 2025;13(1):1–20.
2. Kabeer N. Resources, agency, achievements: reflections on the measurement of women's empowerment. *Development and Change*. 1999;30(3):435–464.
3. Meherali S, Rahim KA, Sulaiman AH, et al. Does digital literacy empower adolescent girls in low- and middle-income countries? A systematic review. *Front Public Health*. 2021; 9:761394.
4. Nayak KV, Alam S. The digital divide, gender and education: challenges for tribal communities during the COVID-19 pandemic. *Decision*. 2022;49(3):303–321.
5. Nussbaum MC. *Women and Human Development: The Capabilities Approach*. Cambridge: Cambridge University Press; 2000.
6. Ragnedda M. Conceptualizing digital capital. *Telematics and Informatics*. 2018;35(8):2366–2375.
7. Sen A. *Development as Freedom*. Oxford: Oxford University Press; 1999.
8. Van Dijk J. *The Deepening Divide: Inequality in the Information Society*. London: Sage Publications; 2005.
9. UN Women. *Progress on the Sustainable Development Goals: The Gender Snapshot 2023*. New York: UN Women; 2023.
10. GSMA. *The Mobile Gender Gap Report 2023*. London: GSMA; 2023.

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 विजय सिंह, डॉ. हितेंद्र सिंह राठौड़. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND). https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/